संजय की कलम से ..

आश्चर्यजनक घटनायें

जगदीश भाई

'संजय की कलम से' के लेखक 'संजय' वास्तव में ज्ञानामृत के प्रथम मुख्य सम्पादक आदरणीय जगदीश भाईजी ही हैं। उनकी अति तीक्ष्ण और दिव्य बुद्धि को देखकर प्यारे बापदादा ने उन्हें यादगार ग्रन्थ महाभारत में वर्णित 'संजय' की उपाधि प्रदान की। ज्ञानामृत की स्वर्णजयन्ती के शुभ अवसर पर हम उनका मार्च, 1965 में छपा प्रथम सम्पादकीय इस बार प्रकाशित कर रहे हैं। 'ज्ञानामृत' से पहले 'त्रिमूर्ति' नाम से एक पत्रिका प्रारम्भ की गई थी जो कुछ सालों के प्रकाशन के बाद बंद हो गई थी। मार्च, 1965 में 'ज्ञानामृत' प्रारंभ हुई। इसका थोड़ा-सा उल्लेख भी इस सम्पादकीय में किया गया है। इस पहले अंक को 'पवित्रता अंक' नाम दिया गया। इसमें छपी सामग्री के कुछ अंश बाद में प्रकाशित पुस्तकों में प्रयोग किये गये जो कि साहित्य के काउंटर पर उपलब्ध हैं जैसे कि 'कमलपुष्प-सम पवित्र जीवन' और 'ब्रह्मचर्य व्रत का पालन और काम विकार पर विजय' आदि।

'ज्ञानामृत' का पहला अंक आप बहनों और भाइयों के हाथों में है। बहुत लोग समझते होंगे कि 'त्रिमूर्ति' के पिछले अंक से लेकर इस अंक के प्रकाशित होने तक जो समय बीता है उस थोड़े से काल में संसार में बहुत बड़ी-बड़ी घटनाएँ घटी हैं और कई नई समस्याएँ तथा नई परिस्थितियाँ पैदा हुई हैं। क्यूबा और अमेरीका के बीच हुआ वृत्तान्त, चीन का हमला, लाओस की घटना, इन्डोनेशिया और मलेशिया के बीच मनमुटाव, वियतनाम की वर्तमान परिस्थिति आदि-आदि अनेक घटनायें हुई हैं। यद्यपि सामान्य दृष्टि से ये घटनायें नई लगती हैं, दिव्य-दृष्टि अथवा ज्ञान-दृष्टि से ये कोई नई नहीं हैं (There is nothing new)। इस पुनरावृत्त होने वाले संसार चक्र में ये अनेकानेक बार हूबहू घटी हैं। ये तो कल्प पहले भी हुई थीं और कल्प के बाद फिर भी हूबहू ऐसे ही होंगी – यह हम अब जान चुके हैं। परन्तु जो मनुष्य त्रिकालदर्शी परमात्मा से योग-युक्त नहीं हुए और जो विश्व के इतिहास के भूत, वर्तमान और भविष्य को यथार्थ रीति नहीं जानते वो इस गूढ़ रहस्य से भी अपरिचित हैं और सोच में हैं। ये

अमृत-सूची

- स्वर्ण जयन्ती तक का सफर *(सम्पादकीय)* 21
- ईश्वरीय कारोबार में 24
- आवरण पर आवरण 27
- दुआओं से अभिषेक *(कविता)* 29
- समय नहीं है 30
- आलोचना से बचें 31
- खुशहाल जीवन के लिए 32
- गुरुपूर्णिमा महोत्सव.....33
- बाबा बने न्यायाधीश.....34
- दीदी की अद्भुत पालना 35
- बिछुड़ने लगे तो 39
- मिला खुदा दोस्त का साथ ...40
- मैंने जाना सच्ची खुशी को 41
- जहाँ एकाग्रता है 43
- शान्ति की खोज में.....46
- डिस्चार्ज होती आंतरिक ऊर्जा की पहचान 48

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

घटनायें हमारे लिये इस कारण भी आश्चर्यजनक, भयंकर अथवा नई नहीं हैं क्योंकि परमपिता परमात्मा द्वारा हमें पहले ही से इस मूल रहस्य का ज्ञान प्राप्त हो चुका है कि अब दिन-प्रतिदिन अधिक ही संकट आयेंगे और संसार की हालत अधिक ही बिगड़ती जाएगी और वह समय जल्दी ही आयेगा जब परिस्थितियाँ बिल्कुल ही विकट हो जायेंगी और ऐटामिक विश्वयुद्ध इत्यादि के द्वारा इस कलियुगी, पतित एवं भ्रष्टाचारी सृष्टि का महाविनाश हो जाएगा। अत: ज्ञान-दृष्टि से देखा जाए तो अभी तक जो कुछ हुआ है वह आने वाली आपदाओं और घटनाओं की भेंट में कुछ भी नहीं है। हम इन घटनाओं के अतिरिक्त यह भी देख रहे हैं कि सतयुग के सुहावने दिन शीघ्र ही आने वाले हैं क्योंकि परमपिता परमात्मा द्वारा न केवल अधर्म के विनाश की बल्कि सत्धर्म की स्थापना की भी तैयारियाँ हो रही हैं।

ये जो घटनायें घटी हैं अथवा घटित हो रही हैं, ये मनुष्य की हिंसा, क्रोधाग्नि, लोभ-वृत्ति इत्यादि की सूचक हैं और ईश्वर-विमुखता की परिचायक हैं। दिन प्रतिदिन विकराल परिस्थितियों का होना ही सिद्ध करता है कि मनुष्य अत्यंत पतित हो गया है। यह जो अन्न का और धन का संकट भारत में है, यह यहाँ के लोगों की योग-भ्रष्ट और विकारी अवस्था ही का संकेतक है क्योंकि रंक को राजा और नर को नारायण बनाने वाले दयालु परमात्मा से योगयुक्त हुए लोगों की तथा श्रेष्ठाचार वाले समाज की तो ऐसी गति कभी भी नहीं हो सकती।

अत: आप और हम कर्म की गहन गति को, वर्तमान कलियुगी सृष्टि के भावी महाविनाश को, सतयुगी सृष्टि की निकट भविष्य में पूर्ण होने वाली स्थापना को, परमपिता परमात्मा के वर्तमान काल में हुए अवतरण के रहस्यों को भलीभाँति जान कर अपने जीवन को कल्याण के लिए ईश्वरीय शिक्षा के आधार पर पवित्र बनाने के पुरुषार्थ में लगे हुए हैं। हम जान चुके हैं कि पवित्रता के बिना न तो व्यक्ति का कल्याण है और न ही विश्व को सुख और शान्ति प्राप्त हो सकती है। हमने अपने जीवन का लक्ष्य ही यह बना लिया है कि परमपिता शिव परमात्मा नित्य प्रति प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा जो ज्ञान देते हैं, जिसको ही सच्चे अर्थ में 'श्रीमद्भगवद्गीता' अर्थात् भगवान के श्रेष्ठ ज्ञान-गीत कहा गया है, उनको हम अधिकाधिक धारण करें और दूसरों को भी उनसे परिचित करायें ताकि वे भी लाभ उठा सकें अर्थात् अपने जीवन को पवित्र करके मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति के लिये पुरुषार्थ कर सकें।

इसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए यह ''पवित्रता अंक'' प्रकाशित किया गया है। इसमें आपको बहुत ही अनमोल ज्ञान-रत्न मिलेंगे। भिन्न-भिन्न शीर्षकों वाले इन सभी लेखों का उद्देश्य मनुष्य को काम, क्रोध इत्यादि विकारों पर विजय प्राप्त करने के योग्य बनाना ही है। इस प्रकार के लेख आपको भविष्य में भी ''ज्ञानामृत'' में मिला करेंगे।

विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी

आप जानते हैं कि यह पवित्रता अंक तो एक छोटा-सा प्रयत्न है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक विधियों से भी जनता की आध्यात्मिक सेवा में हम लोग लगे रहते हैं। अब प्रदर्शनी द्वारा भी ईश्वरीय सेवा की जा रही है।

(शेष..पृष्ठ 38 पर)

दीदी का फ़ैसला

एक बार एक भाई के साथ मेरा थोड़ा विवाद हो गया। हम दोनों को दीदी ने बुलाया। दीदी को फ़ैसला करना था। सच्चाई निकलवाने का दीदी के पास बहुत अच्छा तरीका था। हम दोनों ने अपना-अपना पक्ष सुनाया। दीदी ने कहा, तुम दोनों ने भूल की है, दोनों बाबा के कमरे में एक-एक घंटा योग करो। शाम को दीदी ने फिर बुलाया, पूछा, बाबा के कमरे में गये थे? मैंने कहा, हाँ दीदी, डेढ़ घंटा योग किया। फिर पूछा, रियलाइज़ किया? महसूस कराने की दीदी के पास बहुत अच्छी तकनीक थी। मैंने कहा, हाँ दीदी, महसूस किया। फिर यही बातें दूसरे भाई से भी पूछी। उसने कहा, मैं बाबा के कमरे में गया ही नहीं। दीदी ने कहा, तुम सच्चे नहीं हो, तुम्हें भी तो रियलाइज़ करना चाहिए था ना, यूँ ही शिकायत करते रहते हो। दीदी-दादी के पास ऐसा तरीका था कि किसी को सज़ा की अनुभूति भी नहीं होती थी और उसे अपनी गलती महसूस भी हो जाती थी।

भोजन के समय निरीक्षण

दीदी की परख शक्ति और निर्णय शक्ति बहुत अद्भुत थी। दीदी मन से बहुत ही हलकी और सादी थी। बच्चे के साथ बच्चा, बड़ों के साथ बड़ी बन जाती थी। जब हम भोजन करते थे तो दीदी निरीक्षण करती थी कि कोई बातें करते तो खाना नहीं खा रहे। बाबा ने ही दीदी को कहा था, दीदी, भोजन के समय चक्कर लगाया करो। दीदी के सामने हम बहुत ज्यादा प्रश्न-उत्तर नहीं करते थे, चुप करके सुनते थे और हाँ जी करके चल देते थे। दीदी-दादी की पालना इतनी प्यारी थी कि घर कभी याद नहीं आया। ईश्वरीय कायदों में बहुत फायदे हैं। हम जितना सच्चे दिल से सेवा करेंगे, बाबा खुद ही आगे बढ़ायेंगे। हम किसी की टांग खींच करके, धक्का लगा करके आगे नहीं जा सकते। हम अपनी सेवा से ही आगे बढ़ते हैं। हम दिल से गीत गाते हैं, वो दिन कितने प्यारे थे, ये दिन भी कितने प्यारे हैं। ❖

संजय की कलम से..पृष्ठ 20 का शेष

अनेक वर्षों से कई केन्द्रों पर यह विचार किया जाता रहा है कि ईश्वरीय ज्ञान, योग और पवित्रता से सम्बन्धित एक प्रदर्शनी बनाई जाए। विशेषकर देहली में तो समय-समय पर प्रदर्शनी के बारे में विचार-विमर्श हुआ। आबू में भी प्रदर्शनी-जैसी एक चित्रशाला बनाने की योजना थी परन्तु मुम्बई केन्द्र के भाइयों व बहनों ने इस संकल्प को साकार रूप दिया है। परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान देकर नई सृष्टि का निर्माण कैसे कर रहे हैं और उस ज्ञान से भ्रष्टाचार तथा पापाचार दूर होकर मनुष्य श्रेष्ठाचारी कैसे बन रहे हैं, इस विषय को लेकर 'विश्व नव-निर्माण प्रदर्शनी' के लिये सारी सामग्री रची गई है।

पिछले दिनों मुम्बई में तथा देहली में इसी प्रदर्शनी से सम्बन्धित कार्यों में बहुत व्यस्त होने के कारण ही हम मासिक पत्रिका के कार्य की ओर यथेष्ट ध्यान न दे सके। अत: इसके प्रकाशन में देरी हो गई है। यह सोचकर कि प्रदर्शनी का कार्य भी जनता की ईश्वरीय सेवा का एक आवश्यक कार्य है, पाठकगण क्षमा करेंगे।

नाम में परिवर्तन

हमने सोचा था कि अब भी हम मासिक पत्रिका को 'त्रिमूर्ति' नाम ही देंगे परन्तु बाद में मालूम हुआ कि पिछले कुछ महीनों से एक और पत्रिका इसी नाम से प्रकाशित हो रही है। अत: इस पत्रिका को 'ज्ञानामृत' नाम से प्रकाशित करने का निर्णय किया गया है। यह बात सभी पाठकों को नोट कर लेनी चाहिए। ज्ञानामृत नाम भी बहुत ही अच्छा है। 'त्रिमूर्ति' नाम परमपिता परमात्मा शिव की मधुर स्मृति दिलाता था। अब 'ज्ञानामृत' नाम उन द्वारा प्राप्त हो रहे इस अमृत की ओर ध्यान आकर्षित किया करेगा। ❖